Welcome to Class24

SSC | Railways | NEET | RAS | IIT - JEE

Teaching Exams | School Pre-Foundation | Rajasthan Exams

RAS PRE-2023 Special Batch

RAS से बने RAS

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

RAS PRE-2023 Special Batch

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम

TEST SERIES

RAS से बने RAS

Course Fee: ~~₹ 4999/-~~ ₹ 2999/-

Starts From 10th April

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

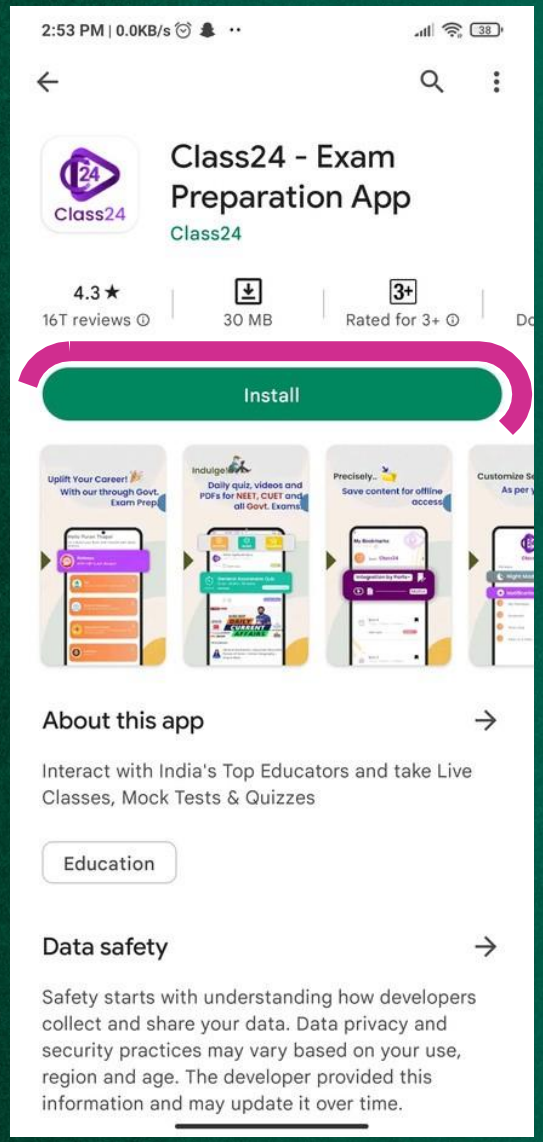

STEP 1

STEP 2

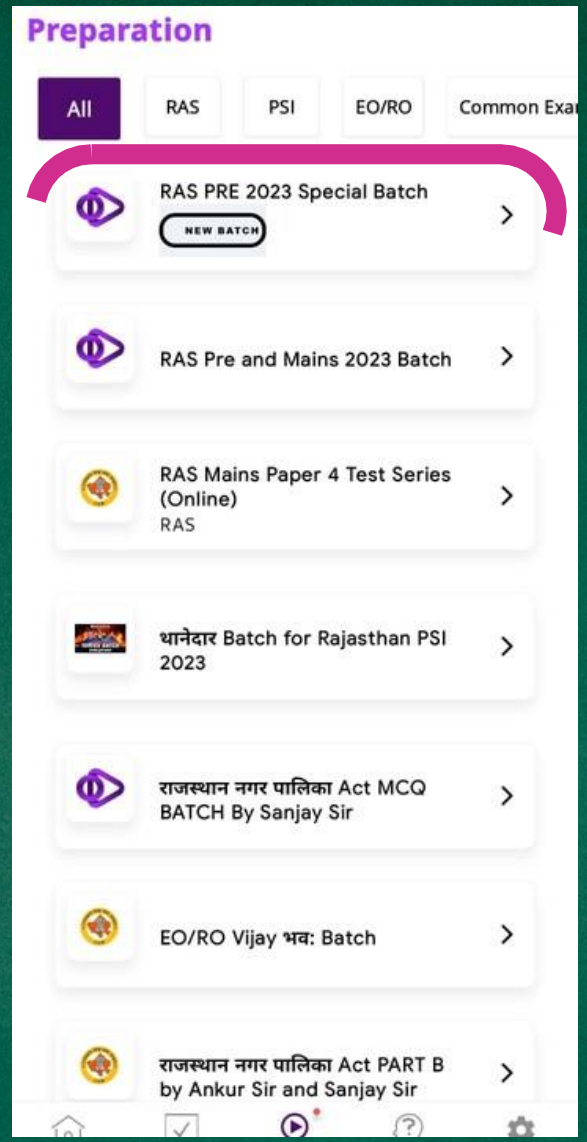

STEP 3

STEP 4

मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था

- मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था सामन्ती व्यवस्था पर टिकी हुई थी। सामन्ती व्यवस्था से तात्पर्य ऐसी व्यवस्था है जिसमें प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था सगौत्रीय वरक्त संबंधों पर आधारित थी तथा राजा समकक्षों में प्रथम हुआ करता था।
- इस व्यवस्था के अनुसार बड़ा भाई राजा बनता था तथा छोटे भाइयों को जीवन निर्वाह के लिए तथा प्रशासनिक व्यवस्था संभालने के लिए भूमि आवंटित की जाती थी। इस भूमि को जागीर व इसके मालिक को सामन्त कहा था। इन सामन्तों का इन जागीरों पर वंशानुगत अधिकार हुआ करता था।

- यूरोप में सामन्ती व्यवस्था में राजा और सामन्त के बीच स्वामी व सेवक का संबंध होता था, परन्तु हमारी सामन्ती व्यवस्था बंधुत्व पर आधारित थी। राज्य राजा की सम्पति न होकर सभी सगौत्रीय बंधुओं की सामूहिक धरोहर था।
- मध्यकाल में मुगलों की मनसबदारी से प्रभावित होकर हमारी सामन्ती व्यवस्था पदसौपान जैसी हुई परन्तु फिर भी मूल ढाँचा यथावत बना रहा।
- हमारी सामन्ती व्यवस्था का स्वरूप एक टैण्ट के समान था। जिसका मध्य का मुख्य स्तम्भ राजा हुआ करता था व अन्य छोर के स्तम्भ सामन्त थे। किसी भी एक स्तम्भ के हिलने से पूरी व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता था।

सामन्तों द्वारा राज्य को दिए जाने वाले कर

1. रेख :- सामन्त द्वारा राज्य को दिया जाने वाला एक निश्चित भू-राजस्व रेख कहलाता था। राजपूतों के मुगलों के सम्पर्क में आने के बाद ये रेख व्यवस्था नियमित हुई।

रेख दो प्रकार की होती है।

(i) पट्टा रेख (ii) भरतु रेख

पट्टा लेख :- वह अनुमानित भू-राजस्व को जागीर दिए जाते समय पट्टे में लिखा होता था।

भरतु रेख :- वह वास्तविक, भू राजस्व जो जागीरदार राज्य को भरता था।

2. चाकरी :-

- राज्य को जागीरदार द्वारा युद्ध व शान्ति के समय दी जाने वाली सेवा चाकरी कहलाती थी।
- युद्ध के समय तो जागीरदार अपनी सेना (जमीयत) सहित राज्य की सेवा में हाजिर होता था।
- शान्तिकाल के समय सामन्त वर्ष में एक बार सेना सहित दरबार में हाजिर होता था तथा उस समय के लिए उन्हें विशेष दायित्व दे दिए जाते थे। दशहरा, आखातीज आदि अवसरों पर भी जाते थे।
- जैसलमेर एकमात्र रियासत जिसमें चाकरी के बदले धन मिलता था।

3. उत्तराधिकार शुल्क :-

- जागीरदार की मृत्यु के बाद राज्य जागीर पर जब्ती बैठाता था। नया जागीरदार जागीर प्राप्त करने के एवज में राज्य को कर चुकाता था जिसे मेवाड़ में कैद खालसा, तलवार बंधाई या नजराना तथा मारवाड़ में हुक्मनामा या पेशकशी कहा जाता था।
- यह एक प्रकार से जागीर का नवीनीकरण शुल्क था।
- अपवाद - जैसलमेर

4. नजराना :-

- राजा के बड़े बेटे की पहली शादी पर सामन्तों द्वारा दिया जाने वाला कर नजराना कहलाता था।
- दशहरा, आखातीज आदि अवसरों पर राजा को जो भेंट दी जाती थी, उसे भी नजराना कहते थे।

5. न्योत कर :-

- राजकुमारियों की शादी पर दिया जाने वाला कर।

सामन्तों को मिलने वाले सम्मान / विशेषाधिकार

1. ताजीम :-

- सामन्त के दरबार में हाजिर होने पर राजा खड़े होकर उसका अभिवादन किया करता था।

यह दो प्रकार की होती थी :-

(i) इकेवड़ी :- राजा केवल आने पर खड़े होकर अभिवादन करता था।

(ii) दोवडी :- आने व जाने दोनों पर खड़े होकर अभिवादन करता था।

2. बाँह पसाव :-

- सामन्त दरबार में आने पर राजा के घुटनों से अपनी तलवार छूता था तथा राजा उसके कंधों को थपथपाते थे।

3. हाथ कुरब :-

- इसमें राजा सामन्त के कंधे पर हाथ रखकर हाथ को हृदय के पास लगा लेता था।

जागीर के प्रकार

(i) सामन्त जागीर

(ii) हुकुमत जागीर

(iii) भौम जागीर

(iv) सासण जागीर

(i) सामन्त जागीर :- राजा द्वारा अपने भाई बंधुओं व निकट संबंधियों को दी जाने वाली जागीरें जिन पर उनका वंशानुगत अधिकार रहता था।

(ii) हुकुमत जागीर :- राजा द्वारा अपने कर्मचारी मुत्सद्दी को वेतन के बदले दी जाने वाली जागीरें जिन पर उनका वंशानुगत अधिकार नहीं होता था।

(iii) भौम जागीर :- राज्य की सेवा में बलिदान होने वाले सैनिकों को दी जाने वाली जागीरें। ये वंशानुगत व अवंशानुगत दोनों प्रकार की होती थी।

(iv) सासण जागीर :- मंदिर, स्जिद, दरगाह, समाधि, चारण कवि तथा ब्राह्मणों को दी जाने वाली जागीरें।

ये करमुक्त होती थी। इसलिए इन्हें माफी जागीर भी कहते थे।

सामन्तों की श्रेणियाँ

- मेवाड़ रियासत में सामन्तों की तीन श्रेणियाँ थी। इनमें प्रथम श्रेणी के 16 सामन्त होते थे जिन्हें उमराव कहा जाता था। इनमें प्रमुख सामन्त सलूम्बर का था जो हमेशा राज्य का सेनापति होता था। उसे हरावल में रहने का अधिकार था। नए राजा के राजतिलक के समय तलवार बांधने का अधिकार था। मेवाड के परवाने व पट्टों पर हस्ताक्षर करने का अधिकार था। राजा की अनुपस्थिति में राजधानी संभालने का अधिकार था।
- दूसरी श्रेणी के सामन्त 32 थे। तृतीय श्रेणी के सामन्तों को "गोल के सामन्त" कहते थे व इनकी संख्या कई सौ थी।

मारवाड में सामन्तों की चार श्रेणियाँ

(i) राजवी

(ii) सिरदार

(iii) गिनाय

(iv) मुत्सद्दी

- राजवी में राजा के निकट तीन पीढियों के सामन्त जिन्हें रेख, चाकरी हुक्मनामा नहीं देना पडता था। तीन पीढी के अलावा अन्य राठौड सामन्त सिरदार तथा ऐसे सामन्त जिनमें मारवाड़ के राठौड़ वंश के वैवाहिक सम्बन्ध होते थे, गिनायत कहलाते थे।
- कर्मचारियों को मुत्सद्दी कहा जाता था।

बीकानेर रियासत में सामन्तों की तीन श्रेणियाँ

(i) प्रथम श्रेणी में बीका के वंशज

(ii) दूसरी श्रेणी में बीका के अलावा अन्य राठौड़ सरदार

(iii) तृतीय श्रेणी में राठौड़ों के आने से पहले रहने वाली जातियां।

❖ कोटा

- कोटा में मुख्य सामन्त 30 हुआ करते थे जिनमें मुख्य संख्या हाड़ा राजपूतों की थी। ये दो भागों में विभाजित थे।

1. देशथी (वे सामन्त जो राज्य में रहते थे।)

2- हजूरथी (वे सामन्त जो राजा के साथ राज्य से बाहर रहते थे)

❖ **जैसलमेर**

- हरराज के समय सामन्तों की दो श्रेणियाँ बनाई गई थी। 1. डावी 2. जीवणी

❖ **आमेर**

- पृथ्वीराज के समय राज्य का 12 भागों में विभाजन किया गया था, जिसे बारह कोटडी व्यवस्था कहा जाता था।

❖ **भौमिए सामन्त :-**

- जिन्हें राज्य बलिदान के बदले भूमि देता था। यह भूमि वंशानुगत तथा अवंशानुगत दोनो प्रकार की होती थी।
- भौमिया सामन्तों से राज्य कई प्रकार के कार्य करवाता था जैसे डाक पहुंचाना, खजाने की सुरक्षा, अधिकारियों की यात्रा के दौरान रहने, खाने की व्यवस्था।

❖ **ग्रासिया सामन्त :-**

- राज्य द्वारा सैनिक सेवा के बदले दी जानी वाली भूमि के मालिक।
- इनकी सेवा में कमी आने पर इनकी भूमि छीनी जा सकती थी।

सामन्ती व्यवस्था की विशेषताएँ

1. यह रक्त संबंधों पर आधारित प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था थी। राजा विभिन्न प्रशासनिक पदों पर इन सांमन्तों की नियुक्तियां किया करता था।

2. राजा प्रशासनिक सैनिक व नीतिगत निर्णयों में सामन्तों की सहायता लेता है। राज्य के उत्तराधिकारी के चयन में भी ये सामन्त मुख्य भूमिका निभाते थे।

3. सामन्त का उत्थान व पतन राजा के साथ ही होता था। सामन्त अपनी मर्जी से किसी अन्य राजा से युद्ध या संधि नहीं करता था।

4. राजा व सामन्तों के संबंध सम्मान व कर्त्तव्य पर आधारित थे। राजा डच सामन्तों को सम्मान दिया करता था इसके बदले सामन्त राज्य के प्रति अपना कर्तव्य निभाते थे।

5. राजा सामन्तों का स्वामी न होकर समकक्षों में प्रथम था। इस तथ्य को मजबूती देने के लिए राजा सामन्तों को काकाजी, भाईजी कहा करता था। वहीं सामन्त राजा को बापजी कहा करते थे।

6. सामन्त को हमेशा अपने पास एक सेना रखनी पड़ती थी, जो युद्ध व शान्ति के समय राज्य के काम आती थी, क्योंकि सभी सामन्त राज्य को सामूहिक धरोहर तथा अपनी पैतृक संपत्ति मानते थे।

राज्य के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

1. राजा:-

- राज्य की सभी प्रशासनिक, न्यायिक व सैनिक शक्तियाँ राजा में निहित होती थी। राजा अपने मंत्रियों, पुरोहित व युवराज की सहायता से राज्य चलाता था।
- राजा स्वेच्छाचारी नहीं होता था बल्कि उस पर धर्मशास्त्रों का व नीतिगत निर्णयों का दबाव रहता था।
- यदि राजा अल्पायु होता था तो राजमाताएँ शासन कार्य संभाला करती थी। राजा के बडे पुत्र को कभी-कभी युवराज बना दिया जाता था तब युवराज भी राजा के शासन कार्य में सहायता करता था।

2. प्रधान :-

- यह राजा को प्रशासनिक व सैनिक परामर्श दिया करता था।
- कोटा व बूँदी में इसे दीवान / फौजदार, जयपुर में मुसाहिब, बीकानेर तथा भरतपुर में मुख्त्यार, मेवाड़, मारवाड, जैसलमेर में प्रधान कहा जाता था।

3. दीवान :-

- यह राजा को आर्थिक, वित्त व राजस्व संबंधी परामर्श दिया करता था।
- परगनों में हाकिम की नियुक्ति की सिफारिश किया करता था।
- कभी-कभी राजा के बाहर रहने पर वह राज्य संभालता था तब उसे "देशदीवान" कहते थे।

4. बक्षी (रक्षामंत्री) :- यह सेना से संबंधित अनुशासन, प्रशिक्षण व सैन्य सामग्री की व्यवस्था करता था।

5. नायब बक्षी :- सेना व किलो पर होने वाले खर्चों की देखभाल करता था। 'रेख' का हिसाब रखता था।

6. शिकदार :-

यह मुगल प्रशासन के कोतवाल के समान था। जो नगर प्रशासन देखा करता था। यह गैर सैनिक कर्मचारियों के खर्चों की भी जांच करता था।

7. खानसामा :-

यह राजकीय महल की आवश्यकताओं की पूर्ति राजकीय उद्योगों में बनने वाले सामान का क्रय-विक्रय करता था।

राजा इस पद पर बेहद ईमानदार व्यक्ति की नियुक्ति किया करता था।

8. मीर मुंशी:-

राज्य का कूटनीतिक पत्र व्यवहार करने वाला अधिकारी।

रूक्का :- राजा द्वारा सामन्तों को भेजे जाने वाले पत्र।

खरीता :- यह राजधानी में ठिकाने का प्रतिनिधि होता है।

9. वकील :- यह राजधानी में ठिकाने का प्रतिनिधि होता है।

10. किलेदार :- किलों की देख-रेख करता था।

11. नैमेत्तिक :- राज ज्योतिषी।

न्याय व्यवस्था

- राजा मुख्य न्यायिक अधिकारी होता था परन्तु राजा के पास केवल बड़े अपराध व मृत्यु दण्ड के मामलें भेजे जाते थे।
- छोटे अपराधों का निपटारा ग्राम पंचायत (पंचकुल) या जातीय पंचायत द्वारा ही कर दिया जाता था।
- खालसा क्षेत्र में न्याय का कार्य हाकिम करते थे।
- जागीरी क्षेत्रों में जागीरदार स्वयं न्याय करता था।
- अपराध को राज्य के विरूद्ध न मानकर व्यक्ति के विरूद्ध माना जाता था।

- अपराधी की सामाजिक व धार्मिक स्थिति देखकर दण्ड दिया जाता था।
- मुकदमों व गवाही का कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था।
- सामाजिक व धार्मिक शास्त्रों के आधार पर न्याय किया जाता था।
- कई जागीरदारों को शरण देने का अधिकार होता था। इस वजह से कई बार बड़े अपराधी उनके पास शरण लेकर बच जाया करते थे।

❖ **भू-राजस्व प्रशासन**

भूमि दो प्रकार की होती थी-

(i) कृषि भूमि

(a) बारानी :- बारिश से सिंचाई।

(b) उन्नाव/पीवल :- कुओं, तालाब, बावड़ियों से सिंचाई।

(ii) चरनोता भूमि :- वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए छोड़ दी जाती थी। इसे गोचर भी कहते थे। यह सार्वजनिक भूमि थी जिस पर सबका सामूहिक अधिकार था। राजा भी इसे खालसा नहीं कर सकता था।

सैद्धांतिक रूप से भूमि राजा की मानी जाती थी परन्तु व्यवहार में भूमि पर किसान का वंशानुगत अधिकार होता था। किसान दो प्रकार के होते थे-

(i) बापीदार :- जिनका भूमि पर वंशानुगत अधिकार होता था। राज्य द्वारा इन्हें भूमि का पट्टा दिया जाता था। जिसे दाखला कहते थे । यदि अकाल के समय किसान अपनी भूमि छोड़कर चला जाता था तो भी वापस आने पर उसका भूमि पर स्वामित्व बना रहता था।

(ii) गैर बापीदार :- वे किसान जिनकी स्वयं की जमीन नहीं होती थी। दूसरो की भूमि लेकर खेती करते थे। इन्हें शिकमी या खेतीहर मजदूर भी कहा जाता था।

- किसान राज्य को एक निश्चित भू-राजस्व चुकाता था जिसे लगान / भोज / भोग हासिल कहा जाता था।
- **भोग :-** यदि अनाज के रूप में कर।
- **हिरण्य :-** नकद के रूप में।
- लगान निर्धारण में भूमि की उत्पादकता, फसल का बाजार भाव व किसान की जाति का ध्यान रखा जाता था। अन्य किसानों की अपेक्षा राजपूत, ब्राह्मण व महाजन किसानों से कम कर दिया जाता था।
- लगान निर्धारण में पटेल व चौधरी मुख्य भूमिका निभाते थे।

❖ लगान निर्धारण की विधियाँ

1. लाटा / कून्ता :- फसल कटते समय या कटने के बाद जब खलिहान में रखी होती थी, तब राज्य के कर्मचारी की देख-रेख में राज्य का हिस्सा अलग कर लिया जाता था।

राज्य का अधिकारी तफेदार कहलाता था।

2. मुकाता :- जब भू-राजस्व का एकमुश्त निर्धारण कर दिया जाता था।

3. डोरी :- जब भूमि को नापकर उसका भू-राजस्व निर्धारण किया जाता।

4. घूघरी :- जब राज्य द्वारा जितना बीज दिया जाता था उतना ही कर के रूप में वापस ले लिया जाए।

बिघोड़ी :- बीघे के आधार पर कर।

गाँव को मोजा कहा जाता था, तथा गांव में राज्य का मुख्य अधिकारी पटवारी होता था।

कई गाँवों के समूह को तपो कहा जाता था।

जाजम :- भूमि के विक्रय पर लिया जाने वाला कर।

डाण :- राज्य का माल एक राज्य से दूसरे राज्य में जाकर बेचने पर लगने वाला कर।

पारगमन शुल्क सायर कहलाता था।

सिंगोटी :- पशुओं के विक्रय पर लगने वाला कर।

❖ सामन्ती व्यवस्था के प्रभाव

नकारात्मक :-

सामन्ती व्यवस्था की वजह से कूपमण्डूकता की स्थिति बनी रही। इसलिए बाहरी प्रभाव से अछूते बने रहे।

सामन्ती व्यवस्था की वजह से कृषि व्यवस्था का ह्रास हुआ। खेती में नई तकनीकें नहीं आ पायी। अंग्रेजों के आने के बाद जब अधिक कर लिया जाने लगा तो किसान विद्रोहों को जन्म दिया।

सामन्ती व्यवस्था की वजह से राज्य में उद्योग धंधों का विकास नहीं हुआ।

- व्यापार वाणिज्य का विकास नहीं हुआ।
- सामन्तों की विलासितापूर्ण जीवनशैली से फिजूलखर्ची को बढ़ावा मिला।
- वंशानुगत व्यवस्था से प्रशासनिक कार्यकुशलता में कमी आई।

❖ **सकारात्मक :-**

- हमारी लोक कला संस्कृति को बचाने में इनका मुख्य योगदान है।
- राजस्थान की स्थापत्य कला में योगदान दिया। हवेलियां, मंदिर इत्यादि बनवाएं।
- लघु उद्योग धंधों को संरक्षण दिया क्योंकि ये स्वयं उनकी मांग का मुख्य केन्द्र हुआ करते थे।
- धार्मिक सहिष्णुता बनाए रखी।

Thank You.....

Like & Share

Click the Icon to Connect with Us ....

Call Now to Connect with Our Support Team

info@class24.study +91-7849841445, +91-8302972601 , +91-787751821

info.class24@gmail.com

www.class24.study

Class24 YouTube Channel

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

RAS PRE & MAINS 2023 BATCH

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम
- TEST SERIES
- REGULAR WRITING PRACTICE

Course Fee: ~~₹14999/-~~ ₹ 9999/-

Starts From 24th Feb.

Call for enquiry: 78498 41445, 8302972601, 7877518210

Step-1

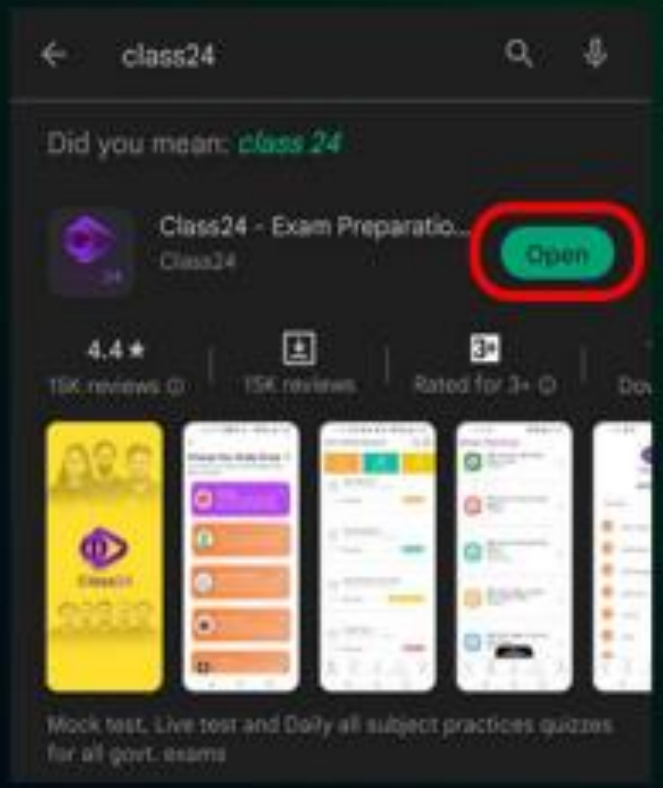

Step-2

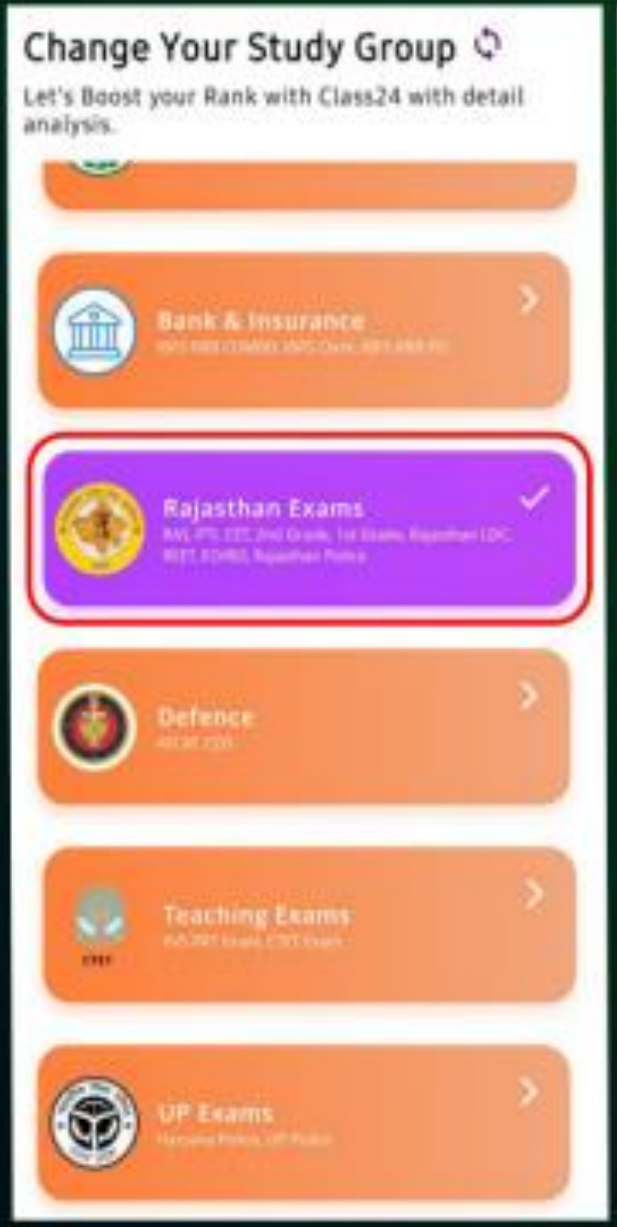

Step-3

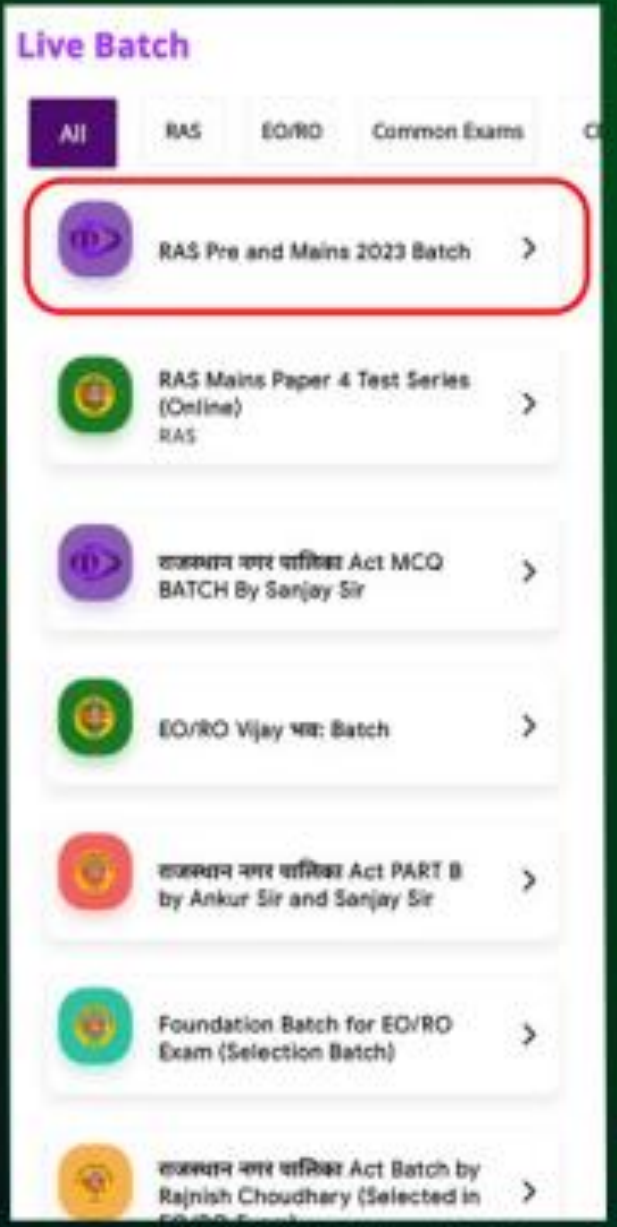

Step-4

राजस्थान में लोक देवता

"पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा।

पाँचू पीर पधारजयो, गोगाजी जेहा।।

- पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी :- ये 5 पीर है जिन्हे हिन्दु व मुस्लमान दोनों मानते है।

पाबूजी राठौड

- **पिता :-** धाँधल जी
- **माता :-** कमला दे
- **जन्म स्थान :-** कोलुमण्ड (बाडमेर)
- **पत्नी :-** फूलमदे / सुप्यार दे (अमरकोट के सूरजमल सोढा की राजकुमारी)
- **घोडी :-** केसर कालमी (देवल नामक चारण महिला की घोडी)
- **सहयोगी :-** चाँदा तथा डामा (दोनो भील भाई थे)
- **मेला :-** कोलुमण्ड में चेत्र अमावस्या को आयोजित किया जाता है।

- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए अपने विवाह के दौरान तीन फेरों के बाद उठकर आ गये थे तथा **"देचू (जोधपुर)"** में **"जींदराव खींची"** (जायल) के खिलाफ लड़ते हुये मारे गये थे।
- पाबूजी को "**लक्ष्मण का अवतार**" माना जाता है।
- पाबूजी को "**ऊँट रक्षक देवता**" कहा जाता है।
- राईका / रेबारी / देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते है।
- पाबूजी को **"प्लेग रक्षक देवता"** भी कहा जाता है।

- पाबूजी ने गुजरात के 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी।
- पाबूजी की फड **"सबसे लोकप्रिय फड है।"** भील जाति के भोपे (पुजारी) फड को गाते समय **“रावणहत्था”** वाद्य यंत्र बजाते है।
- पाबूजी के वीरगाथा गीत पवाडे (भजन) माट वाद्य यंत्र द्वारा गाये जाते है

❖ पाबूजी से सम्बन्धित पुस्तकें:-

1. **पाबू प्रकाश :-** आशिया मोडजी (इनके अनुसार पाबूजी का जन्म बाड़मेर जिले के जूना ग्राम में हुआ था।)
2. **पाबूजी रा दूहा :-** लघराज
3. **पाबूजी रा छन्द :-** बीठू मेहा जी
4. **पाबूजी रा रूपक :-** मोतीसर बगतावर
5. **पाबूजी के सोरठे :-** रामनाथ

- **पाबूजी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-**

✓ **1. गौरक्षक 2. ऊँट रक्षक 3. प्लेग रक्षक 4. अछूतोद्धारक 5. वीरता 6. त्यागशील 7. वचनबद्धता 8. शरणागत रक्षक**

❖ **रामदेवजी तँवर**

- **जन्म स्थान :-** उण्डू काश्मीर (बाडमेर)
- **पिता :-** अजमाल जी (पोकरण के सामन्त)
- **माता :-** मैंणादे
- **पत्नी :-** नेतल दे (अमरकोट के दलेलसिंह सोढा की राजकुमारी)

- **मन्दिर :-** रूणीचा / रामदेवरा (जैसलमेर)
- **गुरू :-** बालीनाथ जी (इनका मन्दिर जोधपुर की मसूरिया पहाड़ी पर स्थित है।)
- **घोड़ा :-** लीलो
- **झण्डा :-** नेजा
- **जागरण :-** जमो
- **मेघवाल भक्त :-** रिखिया
- रामदेवरा में **"परचा बावडी"** है।
- रामदेव जी पुस्तक - **"चौबीस बाणियाँ"**

- रामदेव जी ने **"कामडिया पंथ'** की शुरूआत की थी।
- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा **"तेरहताली नृत्य"** किया जाता है।
- **"भाद्रपद शुक्ल एकादशी"** को रामदेव जी ने रामदेवरा में जीवित समाधि ली थी।
- **"भाद्रपद शुक्ल दसमी"** को **"डालीबाई"** मेघवाल (रामदेव जी की धर्म बहिन) ने रामदेवरा में समाधि ली थी।
- रामदेवजी के मन्दिर में **"पगल्ये"** पूजे जाते है ।
- रामदेवजी ने पोकरण क्षेत्र में भैरव नामक अत्याचारी का दमन किया था।

- रामदेवजी को विष्णु (कृष्ण) का अवतार तथा पीरों का पीर कहा जाता है।
- रामदेव जी ने सामाजिक भेदभाव कम करने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया।

❖ **प्रमुख मन्दिर :-**

1. **रूणीचा –** जैसलमेर
2. **पोकरण –** जैसलमेर
3. **मसूरिया पहाडी –** जोधपुर
4. **हलदिना –** अलवर
5. **छोटा रामदेवरा –** गुजरात

- रामदेव जी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1. अछूतोद्धारक
2. सांप्रदायिक सौहर्द्द के प्रेरक
3. प्रजारक्षक
4. कष्ट निवारक देवता (कुष्ठ रोग)
5. कवि

❖ रामदेव जी के आध्यात्मिक उपदेश :—

1. मूर्तिपूजा का विरोध किया था।
2. तीर्थयात्रा का विरोध किया था।
3. गुरू की महत्ता पर बल दिया था।
4. कर्मवाद पर बल दिया।
5. नाम स्मरण पर बल दिया।
6. सत्संग पर बल दिया।
7. मनुष्य को अपने भ्रम तथा अहं का त्याग करना चाहिए।
8. हर प्राणी में ईश्वर का वास होता है।

- **गोगाजी :-** (गोगाजी चौहान)
- **जन्म स्थान :-** ददरेवा (चुरू)
- **पिता -** जेवर सिंह
- **माता -** बाछल दे
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हे **"जाहिर पीर"** (साक्षात देवता) कहा था।
- अपने मौसेरे भाईयों अरजन व सरजन के खिलाफ गायों की रक्षार्थ युद्ध करते हुये मारे गये थे।
- ददरेवा (चुरू) के मन्दिर को **"शीर्ष मेडी"** (सिर कट कर गिरा था) कहते हैं ।

- गोगामेडी के मंदिर को **"धुर मेडी"** कहते हैं।
- गोगामेडी का मन्दिर **"मकबरा शैली"** में बना हुआ है। मन्दिर में "बिस्मिल्लाह" लिखा हुआ है। (गोगाजी के मन्दिर को मेडी कहते है।)
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी बनी हुई है।
- **"सर्प रक्षक देवता"** के रूप में पूजे जाते है।
- गोगाजी के मन्दिर खेजडी के नीचे बनाये जाते है।
- कवि मेह ने इन पर **"गोगाजी रा रसावला"** नामक पुस्तक लिखी।

❖ हडबू जी सांखला

- **जन्मस्थान -** भूंडेल (नागौर)
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- अपने पिता की मृत्यु के बाद हरभमजाल (जोधपुर) में रहने लगे।
- इनके गुरू बालीनाथ जी थे।
- हडबूजी **"शकुनशास्त्र"** (भविष्य वक्ता) के ज्ञाता थे।

- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया तथा उसे एक कटार भेंट की थी।
- मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया। मन्दिर में **"हडबूजी की बैलगाडी की पूजा"** की जाती है।
- हडबूजी की सवारी / वाहन सियार था।

मेहाजी मांगलिया

- **मुख्य मंदिर** - बापीणी (जोधपर)
- इनका मेला **"कृष्ण जन्माष्टमी"** को लगता है।
- जैसलमेर के **"राणगदेव भाटी"** के खिलाफ युद्ध में लड़ते हुए मारे गये थे।
- इनके घोडे का नाम - किरड काबरा
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है। ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढते है।

तेजाजी :- (पाँच पीर में तेजाजी का नाम नहीं आता)

- खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था।
- **पिता** - ताहर जी
- **माता –** रामकुंवरि
- **पत्नी** - पेमलदे
- **घोड़ी** - लीलण
- **पुजारी / भोपा** - घोड़ला
- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थे।

- **"सुरसुरा (अजमेर)"** नामक गाँव में लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुए घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी।
- तेजाजी **"सर्परक्षक देवता"** के रूप में पूजे जाते है।
- इन्हें **"कालाबाला का देवता'** भी कहा जाता है । (कालाबाला - बीमारी)
- **"हल जोतते समय"** किसान **"तेजाजी के गीत "** गाते है।
- 2010 ई. में तेजाजी पर राजस्थान सरकार द्वारा **"डाक टिकट"** जारी किया गया।
- इनकी घोड़ी लीलण के नाम पर राजस्थान में एक रेलगाड़ी चलती है।

किताब - (1) जुझार तेजा (लज्जाराम मेहता)

— (2) तेजाजी रा ब्यावहला (वंशीधर शर्मा)

- **मुख्य मंदिर** - परबतसर (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के समय में बनवाया गया)
- **अन्य मंदिर** - सैंदरिया (अजमेर में)
  - भांवता (अजमेर में)
  - पनेर (अजमेर में)
  - बासी - दुगारी (बूंदी में)
- **तेजाजी की बहिन बुंगरी माता का मन्दिर** - खरनाल (नागौर) में बना हुआ है।

- देवनारायण जी (औषधि का देवता)
- **जन्म स्थान :-** आसीन्द (भीलवाडा)
- इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था।
- **पिता -** सवाई भोज
- **माता -** सेढू
- **पत्नी -** पीपलदे (धार के राजा जयसिंह परमार की पुत्री)
- **मेला :-** भाद्रपद शुक्ल सप्तमी
- इन्हें **"विष्णु भगवान का अवतार"** माना जाता है।

- इन्हें **"औषधि का देवता"** कहा जाता है।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढाये जाते है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है।
- देवनारायण जी की फड सबसे लम्बी फड है। गुर्जर भोपो द्वारा **"जन्तर वाद्य यंत्र"** के साथ इसे गाया जाता है।
- इस फड पर डाक टिकट जारी हो चुका है।
- देवनारायण जी स्वयं पर भी डाक टिकट जारी हो चुका है।

❖ मुख्य मन्दिर :-

(1) आसीन्द (भीलवाडा)

(2) देवधाम - जोधपुरिया (टोंक)

(3) देवमाली - ब्यावर (अजमेर)

(4) देव डूंगरी - चित्तौड़ (रांगा सांगा द्वारा निर्मित)

❖ देव बाबा

- **मुख्य मन्दिर -** नंगला जहाज (भरतपुर)
- **मेले -** भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)

  - चैत्र शुक्ल पंचमी

- देव बाबा पशु चिकित्सक थे। इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पड़ता है।

❖ **मल्लीनाथ जी**

- ये **"मारवाड़ के राठौड़ राजा"** थे। इन्होंने दिल्ली के सुल्तान फिरोज तुगलक के मालवा के गर्वनर (निजामुद्दीन) को पराजित किया था।
- इनकी रानी **"रूपादे"** लोक देवी है, जिनका मन्दिर मालाजाल (बाड़मेर) में हैं।
- गुरु - उगम सिंह भाटी
- मुख्य मन्दिर - तिलवाड़ा (बाड़मेर)

- यहाँ पर होली के अगले दिन से शुरू होकर 15 दिन तक (चैत्र कृष्णा एकादशी से शुक्ल एकादशी) **"मल्लीनाथ पशु मेला"** चलता है। (मालाणी नस्ल के पशु का क्रय-विक्रय)
- मल्लीनाथ जी **"भविष्य वक्ता"** थे।
- इन्होंने समाज में छुआछूत एवं भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया।
- इन्होंने 1399 ई. में मारवाड़ में बहुत बड़े हरि कीर्तन का आयोजन करवाया था।

- **तल्लीनाथ जी :-** (गोगादेव राठौड)
- इनका वास्तविक नाम - गोगादेव राठौड़ था।
- ये **"शेरगढ (जोधपुर)"** के सामंत थे।
- गुरु - जलंधर नाथ
- मुख्य मन्दिर - पांचोटा (जालौर)
- इन्हें **"ओरण का देवता"** कहा जाता है।
- ओरण - मन्दिर के आस-पास छोडी गई जमीन जहाँ से पेड-पौधे नही काट सकते।

❖ बिग्गा जी

- मुख्य मन्दिर - रीडी (बीकानेर)
- गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे।
- ये जाखड समाज के कुल देवता है।

❖ हरिराम जी

- मुख्य मन्दिर – झोरडा (नागौर)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल पंचमी
- सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते है।

❖ केसरिया कुंवरजी

- गोगाजी के बेटे थे।
- इन्हें भी 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता है।

❖ झरडा जी

- पाबूजी के भतीजे थे।
- जींदराव खींची (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया।
- **मन्दिर - (1) कोलुमण्ड (जोधपुर)**

  - (2) सिंभूदडा (बीकानेर)
- इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता है।
- हिमाचल प्रदेश में इन्हें **"बालकनाथ"** कहा जाता है।

❖ जुन्झार जी

- **जन्म स्थान :-** इमलोहा (सीकर)
- **"स्यालोदडा (सीकर)"** गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थे।
- **"स्यालोदडा मंदिर में 'दुल्हा-दुल्हन'** तथा "इनके 3 भाईयों की मूर्तियाँ बनी हुई है।
- रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता है।

❖ मामादेव

- ये **"बरसात के देवता"** है ।
- इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि गाँव से बाहर इनके **"तोरण की पूजा"** की जाती है।
- इन्हें खुश करने के लिए **"भैसें की बलि"** देनी पड़ती है।

❖ वीरफता जी

- **मुख्य मन्दिर -** सांथू (जालौर)
- **"भाद्रपद शुक्ल नवमी"** को इनका मेला लगता है।

❖ आलम जी

- मुख्य मन्दिर - धोरी मन्ना (बाड़मेर)
- आलम जी को **"अश्व रक्षक देवता"** कहा जाता है।
- आलम जी जैतमालोत राठौड थे।

❖ डूंगजी - जवाहर जी

- **"बाठोठ-पाटोदा (सीकर)"** गाँव के सामन्त थे।
- कालान्तर में ये अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे।
- **प्रमुख सहयोगी** - लोठूजी निठारवाल, करणाजी मीणा, बालूजी नाई, सांखूजी लोहार
- इन्होंने अंग्रेजो की आगरा की जेल तथा नसीराबाद छावनी लूट ली थी।

❖ खेतला जी

- मुख्य मन्दिर – सोनाणा (पाली)
- मेला - **"चैत्र शुक्ल एकम्"** को मेला लगता है।
- यहाँ पर **"हकलाने वाले बच्चों का इलाज"** होता है।

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

info.class24@gmail.com

www.class24.study

Class24 YouTube Channel

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

RAS PRE & MAINS 2023 BATCH

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम
- TEST SERIES
- REGULAR WRITING PRACTICE

Course Fee: ~~₹14999/-~~ ₹ 9999/-

Starts From 24th Feb.

Call for enquiry: 78498 41445, 8302972601, 7877518210

Step-1

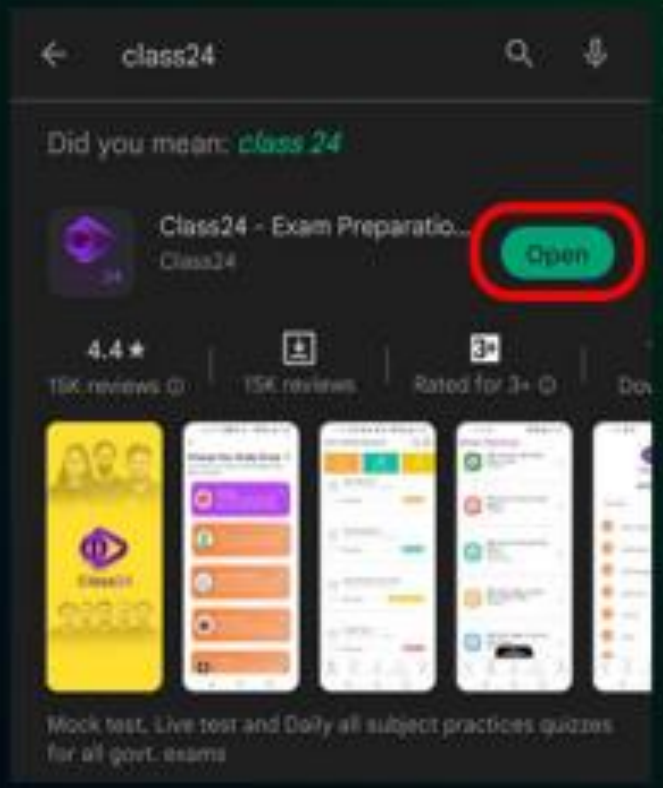

Step-2

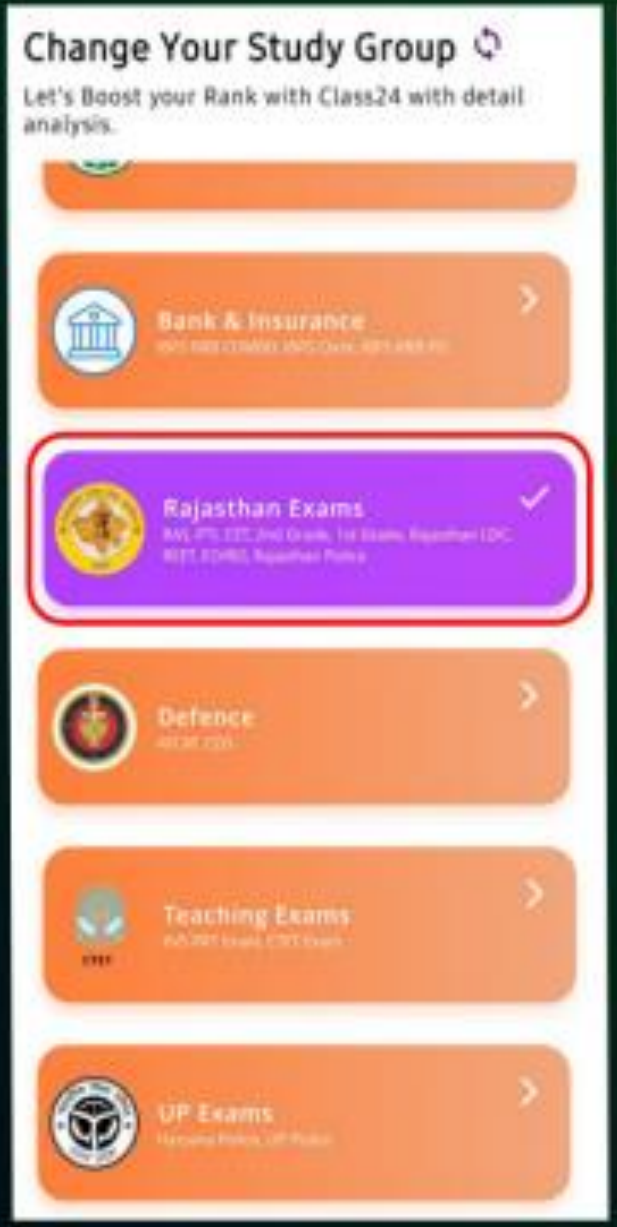

Step-3

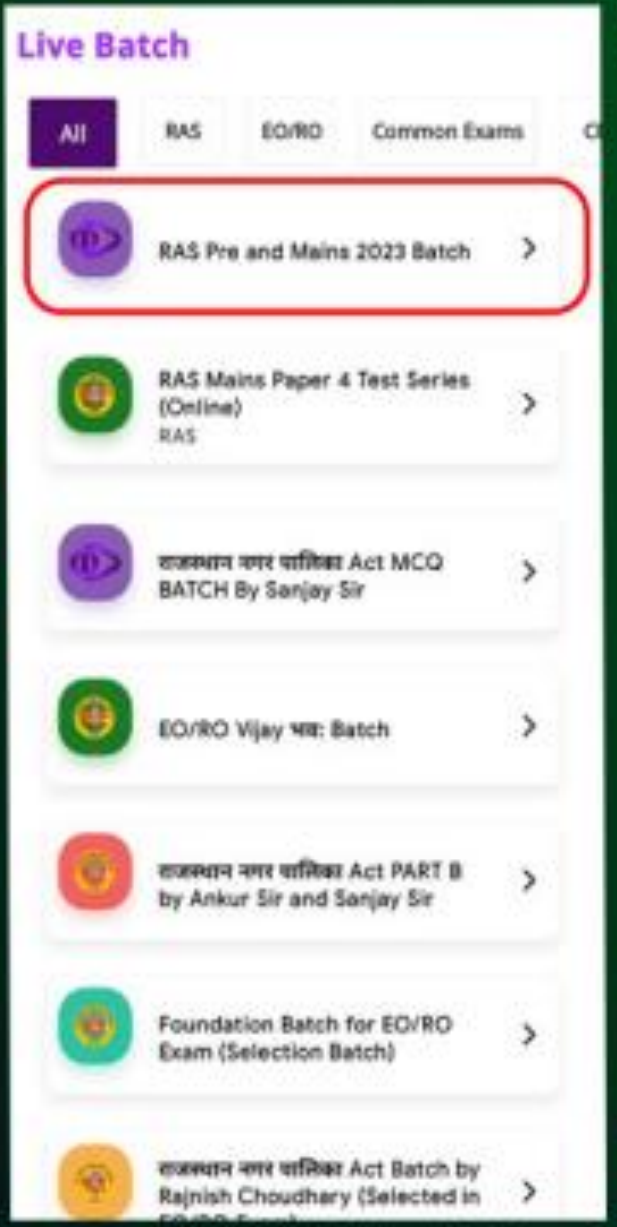

Step-4

राजस्थान के सन्त एवं सम्प्रदाय

- **"दादू दयाल"**
- जन्म - अहमदाबाद
- लोदीराम नामक ब्राह्मण ने पालन-पोषण किया था।

- **गुरू -** ब्रह्मानन्द जी / वृदानन्द / बुढ्ढन बाबा
- राजस्थान में शुरूआती दिनों में ये सांभर में रहे थे, कालान्तर में आमेर में रहे थे।
- **मुख्य पीठ (केन्द्र) -** नरैना (जयपुर)
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का सन्देश दिया था।

- दादू दयाल जी को "राजस्थान का कबीर" कहा जाता है।
- दादूदयालजी ने अपने उपदेश 'ढुढाँडी' में दिये थे।
- **सत्संग स्थल -** अलख दरीबा
- इन्होंने निपख आंदोलन चलाया था।
- आमेर के राजा भगवन्त दास, ने 1585 ई. में दादूदयाल जी की मुलाकात फतेहपुर सीकरी में अकबर से करवाई थी।
- दादूपंथ के मंदिरों को **"दादू द्वारा"** कहा जाता है।
- यहाँ पर दादूदयालजी के ग्रन्थ **"वाणी"** की पूजा की जाती है।

- दादूपंथी मृत व्यक्ति के शरीर को ना जलाते है, ना दफनाते है, बल्कि पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देते है।
- दादूजी का शरीर **"भैराणा की पहाडी (जयपुर)"** में रखा गया था। जिसे **"दादूखोल / दादूपालका** कहा जाता है।
- दादूदयालजी के प्रमुख **52 शिष्य** थे जिन्हे **"52 स्तम्भ"** कहा जाता है।
- **मेला -** नरैना में

❖ **दादूपंथ की शाखाएँ-**

✓ **1. खालसा, 2. विरक्त, 3. उतरादे, 4. खाकी, 5. नागा**

❖ दादूजी के प्रमुख शिष्य-

1. सुन्दरदास जी

- इनका वास्तविक नाम भीमराज था। ये बीकानेर के शासक जैतसी के पुत्र थे।
- इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की।
- नागा साधु अपने साथ हथियार रखते थे।
- इनके रहने के स्थान को छावनी कहा जाता था।
- नागा साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के राजा प्रतापसिंह की मदद की थी।

2. रज्जब जी

- ये सांगानेर के पठान थे।
- इन्होंने दादूजी के उपदेश सुनकर शादी नहीं की तथा "आजीवन दूल्हे के वेष" में रहे।
- पुस्तकें - (1) रज्जब वाणी

  (2) सर्वेंगी

3. सुन्दरदास जी 'छोटे'

- इनका जन्म वैश्य परिवार में हुआ था।
- इन्होंने 42 ग्रंथ लिखे थे। **प्रमुख ग्रन्थ** - (1) ज्ञान समुद्र, (2) सुन्दर सागर
- "गेटोलाव (दौसा)" में सुन्दरदास जी की समाधि बनी हुई है।

4. बालिन्द जी

- ग्रंथ - आरिलो

5. गरीबदास जी

6. मिस्किनदास जी

7. बखना जी

8. माधोदास जी

"जाम्भोजी"

- पीपासर (नागौर) में एक पंवार राजपूत परिवार में जन्म हुआ था।
- पिता जी - लोहट जी
- माता जी - हंसाबाई
- बचपन का नाम - धनराज
- इन्हें "**विष्णु का अवतार**' माना जाता है।

- समराथल (बीकानेर) नामक स्थान पर इन्होंने अपने अनुयायियों को **"29 उपदेश"** दिये थे। इसलिए इनके अनुयायी **"बिशनोई"** (बिस + नौ) कहलाते है।
- मृत्यु - लालासर (बीकानेर)
- समाधि / मुख्य केन्द्र - **"मुकाम (बीकानेर)"**
- यहाँ पर **"आश्विन तथा फाल्गुन** अमावस्या को मेला लगता है।
- ये सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। इसने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या बंद कर दी थी। बीकानेर क्षेत्र में अकाल के समय जाम्भोजी के कहने पर सिकन्दर लोदी ने चारे की व्यवस्था करवाई थी।

- जोधा (जोधपुर) व बीका (बीकानेर) जाम्भोजी का बहुत सम्मान किया करते थे।
- उपदेश स्थल साथरिया कहलाते है।
- **मुख्य मंदिर - (1) मुकाम (बीकानेर)**

(2) जांगलू, (बीकानेर)

(3) रामडावास (जोधपुर)

(4) जाम्भा (जोधपुर)

❖ जाम्भोजी की शिक्षाएँ -

1. हरे पेड नहीं काटने चाहिये।

   सिर साटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।।

2. जीव हिंसा नहीं करनी चाहिये ।

3. नीले कपडे नही पहनने चाहिये।

4. विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।

➢ जाम्भोजी को **"वैज्ञानिक संत'** कहा जाता है।

"जसनाथ जी"

- जन्म स्थान - कतरियासर (बीकानेर) में जाट परिवार में हुआ था।
- पिता - हम्मीर जी
- माता - रूपादे
- मुख्य केन्द्र - कतरियासर
- 1500 ई. में गोरखमालिया (बीकानेर) में जसनाथ जी व जाम्भोजी मिले थे।
- सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।

- सिकन्दर लोदी ने इन्हें कतरियासर को पास भूमि दान में दी थी।
- इन्होंने बीकानेर के लूणकरण को राजा बनने का आशीर्वाद दिया था।
- अपने अनुयायियों को 36 उपदेश दिये थे।
- इनके अनुयायी गले में काली ऊन के धागे पहनते है।
- "मोर पंख" तथा "जाल वृक्ष" को पवित्र मानते है।
- इनके अनुयायियों द्वारा अग्नि नृत्य किया जाता है।

- इनकी पत्नी काजलदे की पूजा की पूजा की जाती है।
- मेले - वर्ष में तीन बार - (1) चैत्र शुक्ल सप्तमी (2) आश्विन शुक्ल सप्तमी (3) माघ शुक्ल सप्तमी

❖ **प्रमुख ग्रन्थ -**

- (1) सिंभुदडा, (2) कोडा

❖ **अन्य केन्द्र -**

- (1) बमलू, (2) लिखमादेसर, (3) पूनरासर, (4) मालासर, (5) पाँचला सिद्धा - नागौर

- संतो के समाधि स्थल को बाडी (84 बाडियाँ प्रसिद्ध) कहते है।
- मुख्य संत - (1) लालनाथ जी - जीव समझौतरी

(2) रामनाथ जी - यशोनाथ पुराण (जसनाथी सम्प्रदाय की बाईबिल)

(3) रूस्तम जी - इन्हें औरंगजेब ने नगाड़ा व निशान देकर सम्मानित किया था।

"चरणदास जी"

- जन्म स्थान - डेहरा (अलवर)
- पिता जी - मुरलीघर
- माता जी - कुंजोबाई
- बचपन का नाम - रणजीत
- गुरू - सुखदेव
- मुख्य केन्द्र - दिल्ली
- मेला - बसंत पंचमी को

- अपने अनुयायियों को "42 उपदेश" दिये।
- इनके अनुयायी "पीले रंग के कपड़े" पहनते है।
- इन्होंने नादिरशाह (1739 ई. में ईरान का राजा — भारत पर आक्रमण) के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।
- **प्रमुख शिष्या -**
- **(1) दया बाई -**
- **पुस्तके- 1. दया बोध, 2. विनय मलिका**

- **(2) सहजोबाई-**
- पुस्तके - सहज प्रकाश
- इस सम्प्रदाय के लोग **"सखी भाव"** से श्री कृष्ण भगवान की पूजा करते हे।
- इन्होंने **"सगुण"** (भक्ति पूजा वाले) तथा "निर्गुण" दोनों की शिक्षा दी थी।
- उपदेश **"मेवाती भाषा"** में दिये थे।
- चरणदास जी जब जयपुर आये तब सवाई प्रताप सिंह ने इन्हें कोलीवाड़ा गाँव दान में दिया।

"लालदास जी"

- जन्म स्थान - धोलीदूब (अलवर)
- समाधि - शेरपुर (अलवर)
- मुख्य केन्द्र - नंगला जहाज (भरतपुर)
- मेला - (1) आश्विन शुक्ल एकादशी, (2) माघ पूर्णिमा
- पिता जी - चांदमल
- माता जी - समदा

- गुरू – गद्दन चिश्ती
- मेव जाति के लकडहारे थे।
- उपदेश - मेवाती भाषा में
- इनका मेवात क्षेत्र में प्रभाव अधिक था।
- ग्रन्थ - लालदास की चितवाणियाँ
- बांधोली - अलवर में काफी समय रहे थे।
- इनके पुत्र कुतुब खाँ का मुख्य केन्द्र - बांधोली

"संत हरिदास जी "

- जन्म – कापडोद (नागौर)
- वास्तविक नाम – हरिसिंह सांखला
- पहले डाकू थे परन्तु बाद में सन्यासी बन गये।
- **मुख्य केन्द्र :-** गाढा (डीडवाना)
- इन्होंने हरिदासी या **"निरंजनी सम्प्रदाय"** चलाया था।
- इन्होंने **"निर्गुण व सगुण"** दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया था।
- पुस्तकें :- 1. मन्त्र राज प्रकाश, 2. हरि पुरूष जी की वाणी

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

info.class24@gmail.com

www.class24.study

Class24 YouTube Channel

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

RAS PRE & MAINS 2023 BATCH

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम
- TEST SERIES
- REGULAR WRITING PRACTICE

Course Fee: ~~₹14999/-~~ ₹ 9999/-

Starts From 24th Feb.

Call for enquiry: 78498 41445, 8302972601, 7877518210

Step-1

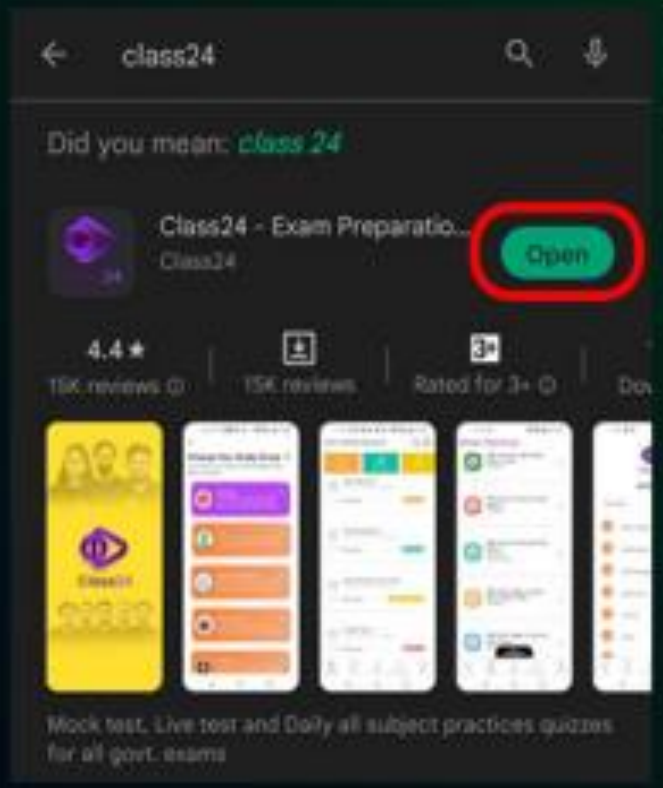

Step-2

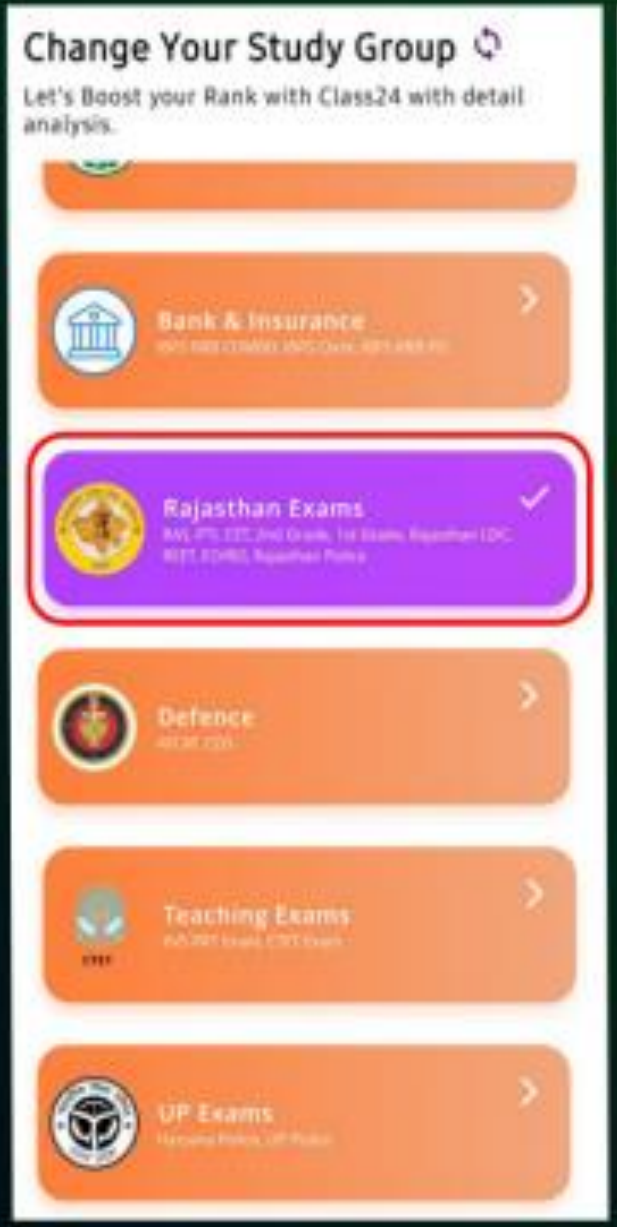

Step-3

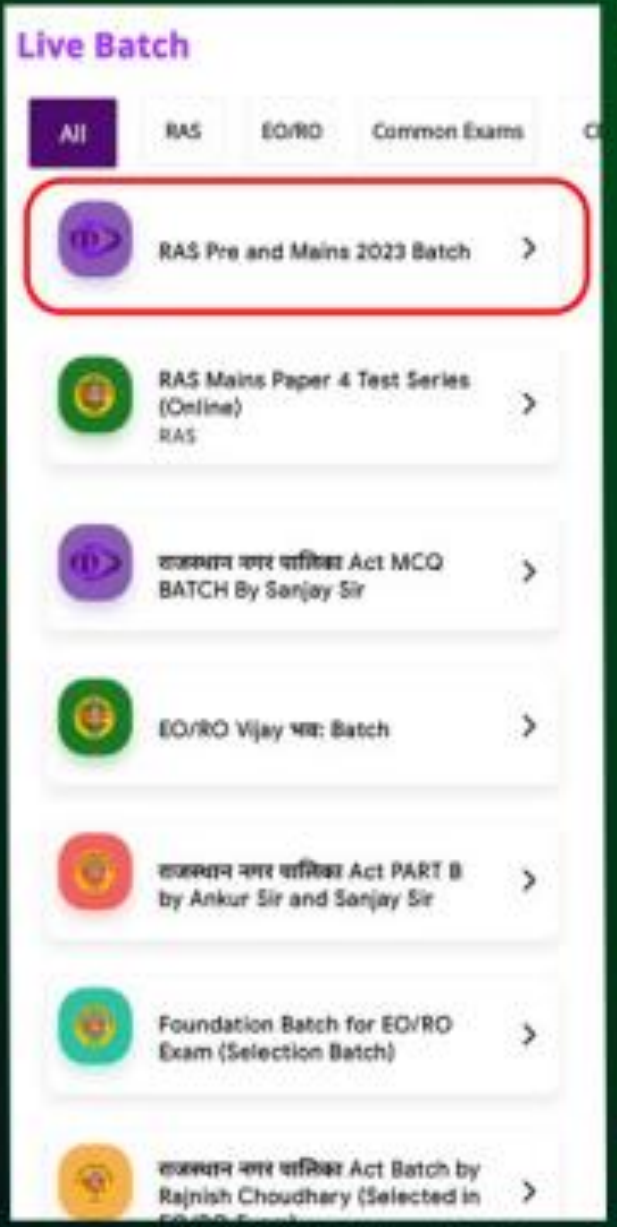

Step-4

- **"संत मावजी"**
- जन्म स्थान :- साबला (डूंगरपुर)
- इन्होनें भगवान श्री कृष्ण की पूजा "निष्कंलक अवतार" के रूप में की थी।
- इन्होनें निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया था।
- इनके अनुयायी इन्हें विष्णु का कल्कि अवतार मानते है।
- इन्होनें कृष्ण लीला की रचना **"वागडी भाषा"** में की थी।
- संत मावजी ने बेणेश्वर धाम (डूंगरपुर) की स्थापना की थी।

- **प्रमुख ग्रंथ :- 1. चोपडा**
- यह ग्रन्थ वाद–विवाद शैली में है। दीपावली को इनका वाचन करते है। इनमें भविष्यवाणियां है। कुल 5 चोपडे है, जो इस प्रकार है-
- **(1) प्रेम सागर, (2) मेघ सागर,**
- **(3) साम सागर, (4) रत्न सागर,**
- **(5) अनन्त सागर,**
- **अन्य केन्द्र — (1) शेषपुर, (2) पुंजपुर।**

- **बालनन्दाचार्य**

- **मुख्य पीठ - लोहार्गल (झुंझुनूं)**
- यह अपने पास सेना रखते थे इसलिए इन्हें **"लश्कर संत"** कहा जाता है।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।
- इन्होनें 52 मूर्तियों को औरंगजेब से बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया था।
- इन्होनें औरंगजेब के खिलाफ मेवाड के राजसिंह तथा मारवाड के दुर्गादास राठौड की सहायता की थी।

❖ नवलदास जी

- **जन्म स्थान :-** हरसोलाव (नागौर)
- मुख्य केन्द्र - जोधपुर
- सम्प्रदाय - नवल सम्प्रदाय
- ग्रन्थ - नवलेश्वर अनुभववाणी
- जन्म स्थान :- सुलखनिया (चुरू)
- मुख्य केन्द्र – बीकानेर
- सम्प्रदाय - अलखिया
- ग्रन्थ - अलख स्तुति प्रकास

❖ संत धन्ना

- जन्म स्थान :- धुवन (टोंक)
- इनका जन्म जाट परिवार में हुआ था।
- गुरू - रामानन्द जी
- राजस्थान में भक्ति आन्दोलन की शुरूआत की थी।
- "बोरानाडा (जोधपुर)" में इनका मंदिर बना हुआ है।
- ये पंजाब में भी लोकप्रिय है।

❖ "संत पीपा"

- वास्तविक नाम :- प्रताप सिंह खींची।
- "गागरौण" (झालावाड़) के राजा थे।
- रामानन्द जी के शिष्य थे। (कुल 12 शिष्य थे)
- संत पीपा "दर्जी समाज के प्रमुख देवता" है।
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।
- मुख्य मंदिर - समदड़ी (बाड़मेर)

- छतरी - गागरौण
- गुफा— टोडा (टोंक)
- मेला – चैत्र पूर्णिमा
- ग्रन्थ – (1)पींपापरची (2) चितावनी (3) पींपा कथा
- टोडा के राजा शूरसेन ने इनसे प्रभावित होकर अपना पूरा धन साधू-सन्तों में बांट दिया गया था।
- मुख्य केन्द्र - दाँतडा (भीलवाडा)
- सम्प्रदाय - गूदड सम्प्रदाय

❖ राजराम जी

- मुख्य केन्द्र - शिकारपुरा (जोधपुर)
- पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया था।
- पटेल समाज के लोग विशेष आस्था रखते है।

❖ नरहड पीर

- वास्तविक नाम :- हजरत शक्कर बाबा
- मुख्य केन्द्र :- "नरहड़ (झुंझुनूं)"
- "कृष्ण जन्माष्टमी" को इनका मेला/उर्स लगता है। यहाँ पर पागलों का इलाज किया जाता है।
- यह साम्प्रदायिक सौहार्द्र तथा हिन्दू मुस्लिम एकता का स्थान है।
- इन्हें **''बांगड़ का धणी''** कहा जाता है।
- **''सलीम चिश्ती''** इनका शिष्य था।

❖ रामानन्दी सम्प्रदाय→

- कृष्णदास पयहारी ने अनन्ता जी के शिष्य गलता जी में इस सम्प्रदाय की मुख्य पीठ की स्थापना की।
- पृथ्वीराज कछवाहा कृष्णदास का भक्त था।
- कृष्णदास के शिष्य अग्रदासजी ने रैवास (सीकर) में इस सम्प्रदाय की दूसरी पीठ की स्थापना की।
- ये भगवान राम की पूजा रसिक रूप में करते हैं। अत: यह रसिक सम्प्रदाय भी कहलाता है।

- सवाई जयसिंह के समय कृष्णभट्ट ने **"राम रा सा"** की रचना की थी।
- इनकी (रामानन्द) के निर्गुण शिष्यो से रामस्नेही सम्प्रदाय निकला।
- रामानुज + रामानन्द (रामानन्दी सम्प्रदाय) - भक्ति दास्य भावणी)

❖ **निम्बार्क सम्प्रदाय (हंस सम्प्रदाय)**

- प्रवर्तक - आचार्य परशुराम → ग्रन्थ - परशुराम सागर
- मुख्यपीठ - सलेमाबाद (अजमेर)
- राधा को भगवान श्री कृष्ण की पत्न मानकर पूजा करते हैं।
- द्वैताद्वैत दर्शन दियाा (भैदाभेद)
- ग्रंथ - वेदांत परिभाष्य

❖ वल्लभ सम्प्रदाय

- प्रवर्तक - वल्लभाचार्य (तेलगांना के ब्राह्मण)
- मुख्य पीठ - नाथद्वारा (उदयपुर)
- दर्शन - शुद्ध अद्वैतवाद (शुद्धाद्वैत)
- ग्रंथ - अणुभाष्य
- श्रीकृष्ण के बालस्वरूप की पूजा
- कपड़े के परदे पर कृष्ण लीलाओं का अंकन किया जाता है जिन्हें **"पिछवाई"** कहते हैं।

- 1672 में गोविंददेव जी एवं दामोदर दास (दाऊजी महाराज) ने इनकी मूर्ति को सिहाड़ (नाथद्वारा) में स्थापित किया।
- वल्लभ सम्प्रदाय की कुल 41 पीठें हैं।
- इन पीठों को हवेली कहा जाता है।
- हवेलियों में गाये जाने वाले संगीत को हवेली संगीत कहते हैं।
- वल्लभ सम्प्रदाय को **"पुष्टि मार्ग सम्प्रदाय"** भी कहते हैं।

❖ **अन्य, प्रमुख पीठे -**

- द्वारकाधीश - कांकरोली
- मथुरेशजी - कोटा
- मदनमोहन जी - भरतपुर
- गोकुल चन्द जी - कामां (भरतपुर)
- विठ्ठल दास जी ने **"अष्टछाप कवि मंडली"** का गठन किया

- **गौडीय सम्प्रदाय → (गौड़ स्वामी द्वारा अधिक प्रचारित)**
- प्रवर्तक - चैतन्य महाप्रभु
- प्रमुख पीठ - जयपुर
- राजा मानसिंह ने वृंदावन में राधा गोविंद देवजी का मंदिर बनवाया।
- सवाई जयसिंह ने जयपुर में गोविंद देवजी का मंदिर बनवाया।
- इस सम्प्रदाय की दूसरी पीठ मदनमोहन (करौली) है जिसका निर्माण गोपालपाल ने करवाया था।
- माध्वाचार्य ने पूर्णप्रज्ञ भाष्य की रचना
- दर्शन → द्वैतवाद
- सगुण ईश्वर (विष्णु) की पूजा

- **संत पीपा → ग्रन्थ - चिंतामणी**
- वास्तविक नाम - प्रतापसिंह
- गागरोन के खिंची चौहान (शासक)
- समदड़ी (बाडमेर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- दर्जी समाज के आराध्य देव।
- टोड़ा (टोंक) में इनकी गुफा बनी हुइ है।
- कालीसिंध नदी के किनारे स्मारक बना हुआ है।
- रामानन्द के शिष्य।
- राज. में भक्ति आन्दोलन का अलख जगाने वाले प्रथम सन्त

❖ लालदासी सम्प्रदाय→

- प्रवर्तक - लालदासजी
- जन्म - धौलीदूब गाँव (अलवर)
- मृत्यु - नगला जहाज (भरतपुर)
- समाधि - शेरपुर (अलवर)
- मेव जाति के लकड़हारे थे।
- गुरु - गद्दन चिश्ती थे।

❖ रामस्नेही सम्प्रदाय→

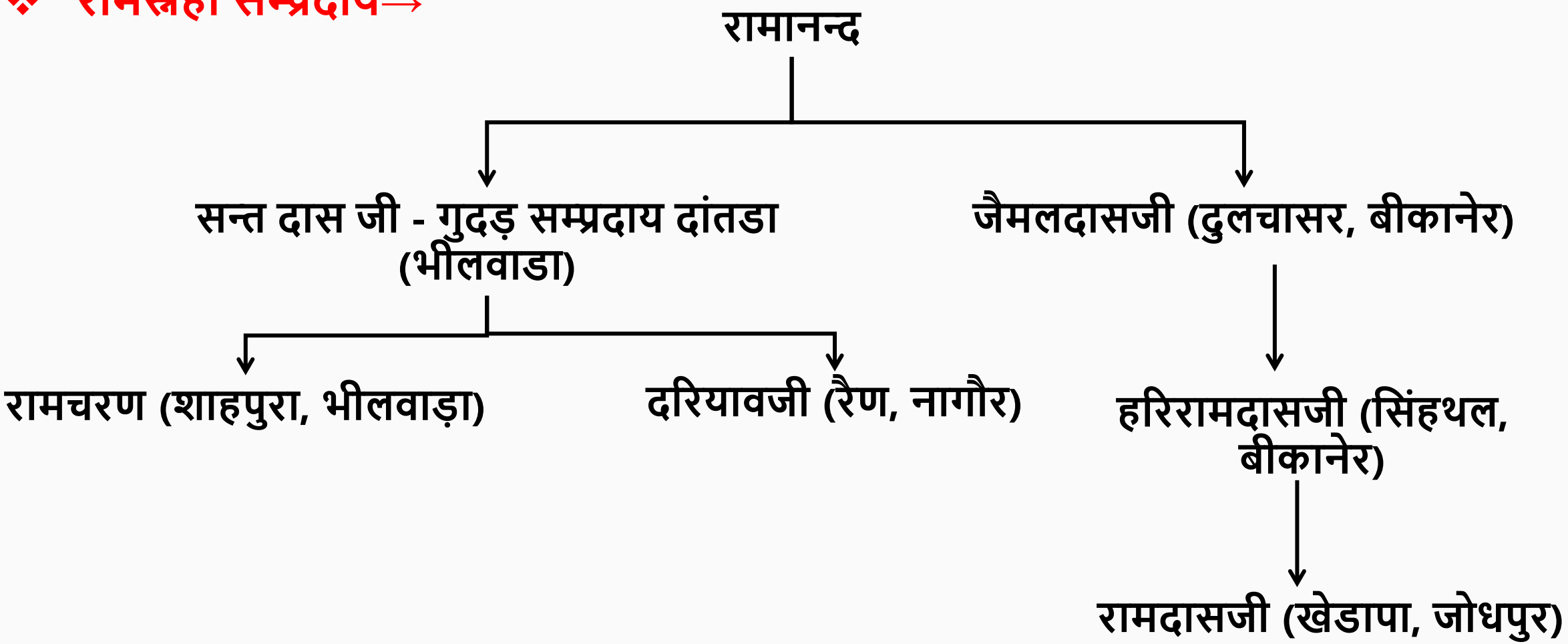

❖ **रामस्नेही सम्प्रदाय की राज में चार प्रमुख पीठे हैं-**

1. **शाहपुरा (भीलवाड़ा)**
2. **प्रवर्तक – रामचरण**
3. **बचपन का नाम – रामकिशन**
4. **जन्म – सोडा गाँव (टोंक)**

- शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- शाहपुरा के ठाकुर रणसिंह ने इनके रहने के लिए छतरी बनवाई।
- रामचरणजी के उपदेश अणयैवाणी ग्रंथ में संकलित हैं।
- होली के दूसरे दिन फूलडोल उत्सव (मेला भरता है) मनाया गया।

(2) रैण (नागौर)

- संस्थापक – दरियावजी

(3) सिंहथल (बीकानेर) –

- संस्थापक – हरिरामदास जी
- ग्रंथ - निशानी जिसमें यौगिक क्रियाओं का उल्लेख हैं।

(4) खेड़ापा (जोधपुर) –

- संस्थापक – रामदासजी
- गुरु – हरिरामदास जी
- जैमलदास को सिंहथल एवं खेडापा शाखा का आदि आचार्य कहा जाता है।
- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग निर्गुण राम की पूजा करते हैं दशरथ पुत्र राम की नहीं।
- गुलाबी रंग के वस्त्र पहनते हैं।
- इनके मंदिरों को **"रामद्वारा"** कहा जाता है।

मीरा

- जन्म – कुड़की गाँव (पाली)
- पिता - रत्नसिंह (मेड़ता)
- दादा - राव दूदा जोधा का सबसे छोटा पुत्र)
- शिक्षक – गजाधर
- पति – भोजराज (सांगा का ज्येष्ठ पुत्र)
- गुरु- रैदास (रैदास की छतरी चित्तौड में बनी हुई है)
- मीरा द्वारिका में भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गई थी।
- मीरा भगवान श्री कृष्ण की पूजा पति के रूप में करती थी।

- रैदास के उपदेश "रैदास की पर्ची" नामक ग्रंथ में हैं।
- मीरा की पुस्तकें –
- गीत गोविन्द – टीका राग गोविन्द, नरसी मेहता की हुंडी रुक्मणी मंगलाहरण
- सत्यभामा नूं रुसणौ
- रत्नाखाती के सहयोग से **"नरसी जी रो मायरो"** नामक ग्रंथ लिखा।
- मीरा को राज. की राधा कहा जाता है।
- मीरा के पद (दोहे, गीत) हरजस कहलाते हैं।
- गाँधीजी मीरा को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने वाली सत्यग्राही महिला के के रूप में देखते थे।

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST